नागार्जुन के उपन्यासों में जनवादी चेतना के रूपक

संदीप[1], प्रो प्रणव शास्त्री[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, गन्ना उत्पादक महाविद्यालय बहेड़ी, बरेली, उ०प्र०, भारत

[2]प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत, उ०प्र०, भारत

Author Email: sandeepsonkar04715@gmail.com

नागार्जुन हिंदी साहित्य के एक प्रमुख जनवादी उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यासों में हमें जनवादी चेतना के विविध पक्षों का निदर्शन होता है। शोषित,वंचित दलित और उत्पीड़ित वर्ग की पीड़ा का सहज निदर्शन कराती उनकी रचनाएँ पाठकों के हृदय पर अमिट प्रभाव छोड़ती हैं। कृषक,मजदूर, दलित और स्त्री की पीड़ा उनकी औपन्यासिक रचनाओं में आधोपान्त दिखाई देती है। नागार्जुन के जनवादी लेखन में सामाजिक जागरण के साथ ही राजनीतिक जागरण का भाव भी निहित है। सामाजिक और आर्थिक विषमता का चित्रण करते हुए नागार्जुन अत्यंत संवेदनशील और मुखर हो उठते है। उनके उपन्यासों में पूँजीवाद की विसंगति और विडम्बना, सामाजिक क्षरण, निम्नवर्ग की दयनीय स्थिति,पारिवाारिक विघटन, सांस्कृतिक मूल्यहीनता इत्यादि का व्यापक चित्रण है। आम आदमी का त्रासद जीवन, अभाव और अपमान से पीड़ित मजदूर और स्त्री , मोहभंग से पीड़ित आम मानस की दारूण कथा का नागार्जुन ने विद्रोही स्वर प्रदान किया है। वस्तुतःवे जन के कवि हैं। उनका जनवाद सरोकारपरक है एवं राजनीतिक रूप से मुखर है। सामाजिक भेदभाव और मूल्यगत पतनषीलता पर नागार्जुन मारक व्यंग्य करते हुए भी दिखाई देते हैं। 'रतिनाथ की चानी 'उपन्यास में यह संदर्भ द्रष्टव्य है। उपन्यास में गौरी नामक पात्र का अनैतिक सम्बन्ध अपने विधुर देवर जयनाथ से है। इस पर बुधन चमार की पत्नी अपना मंतव्य प्रकट करती है– ''भला यह भी क्या कहने की बात है मलिकाइन ? आपकी बदनामी क्या हमारी बदनामी नहीं हैं? पर एक बात कहती हूँ ,माफ करना ,बड़ी जात वालों की तुम्हारे यहाँ बिरादरी मलिच्छ,बड़ी निठर होती है ! हमारी बहू–बेटियाँ रॉड हो जाती हैं पर हमारी बिरादरी में किसी के पेट से आठ–आठ ,नौ–नौ महीने का बच्चा निकालकर जंगल में फेंक आने का रिवाज नहीं है। ओह! कैसा कलेजा होता है तुम लोगों का ! मिया–रि–मिया !''(1) प्रस्तुत कथन के माध्यम से नागार्जुन वर्ग–वैषम्य के साथ ही आभिजात्य वर्ग की पतनशीलता पर करारा व्यंग्य और प्रहार करते हैं। आभिजात्य वर्ग में विद्यमान चारित्रिक पतनशीलता और छद्म दिखावे के प्रति भी नागार्जुन रोष प्रकट करते हैं–''शायद ही कोई कुकर्म उनसे छूटा हो। तरूणी विधवाओं को प्रेमपाश में फाँसकर फिर उनकी जायदाद अपने नाम लिखवा लेना और चूसे आम की गुठली की भाँति फिर उन्हें फेंक देना ,दो खेतवालों में सीमा का झगड़ा खड़ा करके मुकदमों सें फँसा देना और उनमें से एक को खुद का बनाकर लील जाना ,सस्ते दामों में अँगूठे (हैडंनोट) खरीदकर पीछे ज्यादा से ज्यादा दाम चढ़ाकर उन्हें अदालत में पेश कर देना और अपने घर में आप ही सेंध डलवाकर पड़ोसी को गिरफ्तार करवा देना। इसी रास्ते चलकर जयदेव उस मंजिल तक पहुँचे थे ,जहाँ कि चोरों का सरदार और थाने का दारोगा समान श्रद्धा–भक्ति से स्वागत पाता है। ''(2) नई पौध उपन्यास में नागार्जुन ने सामाजिक विसंगतियों का अत्यंत संवेदनशील चित्रण किया हैं।उपन्यास में स्त्रीयों की दारूण दषा के विभिन्न रूपक दिखाई देते हैं। लोभ के कारण बेटियों का बेमेल विवाह प्रस्तुत रचना की एक प्रमुख समस्या है। छः बहनों को लोभ हेतु एक प्रकार से विवाह के नाम पर बेच दिया गया था –''सभी बहनें माँ–बाप को शाप दिया करती थीं। कोई गूँगे के पल्ले पड़ी थी तो कोई बौडम के पल्ले। कोई तीन जिला पार फेंक दी गई थी तो कोई पाँच सौ पर। उनमें से चार को भाग्य के वैधव्य के बीहड़ जंगल में डाल दिया था। एक पगली हो गई थी , एक को उसके आदमखोर पति ने किरासन तेल की मदद से जलाकर खाक कर डाला था।''(3) उपन्यास में नागार्जुन ने उन पण्डितों और दलालों का भी यथार्थ चित्रण किया है जो लोभवश विवाह सम्पन्न कराते हैं। नागार्जुन लिखते हैं–''कलकत्ते के रायल एक्सचेंज में ,बम्बई के कोलाबा देवी वाले मुहल्लों में और दिल्ली भी चाँदनी चौक की गलियों में सट्टेबाजी की हलचल कभी देखी है आपने ? हाँ ! तो बस समझ लीजिए कि मैथिली ब्राह्यमणों की ब्याह की अनोखी मंडी में कुछ वैसा ही चल रहा था।'' (4) पूँजीवादी व्यवस्था के विद्रूप का शिकार आम आदमी इसी प्रकार की वंचना को अनन्तकाल तक भोगता आया है। बाल–विवाह और वैधव्य को झेलती तरूणियाँ उपन्यास की मूक पुकार है। उनका अभिषप्त जीवन अत्यन्त कारूणिक एवं द्यनीय है।

'बाबा बटेसरनाथ ' नामक उपन्यास में भी लेखक ने अनेक सामाजिक विसंगतियों का चित्रण किया है। अवसरवाद और स्वार्थपरता का यथार्थपरक चित्रण उपन्यास में दिखाई देता है। शहरों के पीछे छूटते गाँव और सामाजिक संस्कृति का ह्रास यहाँ स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। नागार्जुन का यह कथन महत्वपूर्ण रूप सें द्रष्टव्य है–'' जीने के लिए जीना ,जीना नहीं है। परोपकार के लिए जीना ही,जीना है। अगर मेरी मृत्यु जनसाधारण के लिए लाभप्रद हो तो नहीं चाहिए यह जीवन। परंतु एक स्वार्थी धूर्त व्यक्तिगत हानि–लाभ की दृष्टि से मुझे देखते हैं, मैं कभी नहीं चाहूँगा कि उनका मनोरथ पूर्ण हो.....नहीं बेटा बिल्कुल नहीं।''(5) उपन्यास में सामंतवाद से पीड़ित समाज और स्वराज्य की आकांक्षा से युक्त जनसाधारण का चित्रण प्रबल रूप से दिखाई देता है।

'वरूण के बेटे ' उपन्यास में लेखक ने गरीब और संघर्षरत मछुआरों के जीवन का कारूणिक चित्रण किया है जो अत्यंत मर्मस्पर्शी है। आजीविका के लिए संघर्ष करते और अधिकारों से हीन मछुआरा समाज अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करना चाहता है। उसे व्यवस्था से कोई उम्मीद नहीं है। गरीब खुरखून के त्रासद जीवन के माध्यम से लेखक ने इस विडम्बना को बयान किया है–''सात–आठ खाने वाले

,खुरखून अकेला कमाने वाला। औरत हमेशा की पिलपिली। कौन सी बीमारी उसे नहीं हुई थी, मलेरिया का शिकार वह। कालाज़ार की पचासों सुंईयाँ उसको लगीं। पेचिश और संग्रहणी की मिटाई उससे? और अब दामाद ने दरसन दिये थे। ''(6) त्रासद जीवन जीने वाले को कहीं से भी प्रत्याशा की कोई किरण दिखाई नहीं देती। यहीं उसकी नियति बन चुकी है जहाँ अभाव ही उसके अभिषप्त जीवन का साथी है।

'दुःख मोचन' उपन्यास भयंकर अभावों और समस्याओं से जूझते निम्न वर्ग का करूण आख्यान है। सम्पन्न वर्ग को पीड़ितो से कोई सरोकार नहीं है और वे अपनी ही उदरपूर्ति में लगे हुए हैं–''पंचायत गाँव की गुटबन्दी को तोड़ नहीं सकती थी अब तक। चौधरी टाइप के लोग स्वार्थ–साधन की अपनी पुरानी लत छोड़ने को तैयार नहीं थे। जात–पाँत का टंटा ,खानदानी घमण्ड, दौलत की धौंस, अशिक्षा का अंधकार,लाठी की अकड़ नफरत का नशा, रूढ़ि और परम्परा का बोझ–जनता की सामूहिक उन्नति के मार्ग में एक नहीं अनेक रूकावटें थी। मुसीबत के दिनों में बाहर वालों से तत्काल सहायता पाना जितना कठिन था, उससे भी कठिन सहायता में मिली हुई वस्तुओं और रकमों को सही जगह तक पहुँचाना। स्वार्थी और लालची लोगों के सींग नहीं हुआ करते, न कोई खास झण्डा–पताका होता है उनका।''(7) लेखक के अन्य उपन्यासों में भी सामाजिक विसंगतियों का जीवंत चित्रण हुआ है। नागार्जुन द्वारा लिखा गया एक अन्य प्रमुख उपन्यास है– कंभीपाक । इस उपन्यास में भी उन्होंने सामाजिक विसंगतियों और समस्याओं का संवेदना परक वर्णन किया है। अनैतिक सम्बंधो और उसके कारणों और प्रभाव का भी उन्होनें विश्लेषण किया हैं। उम्मी और महीम में विवाहपूर्ण ही अनैतिक सम्बंध बनते हैं।उम्मी और महीम के विवाह के बाद भी उम्मी की माँ हस्तक्षेप करती है और वह महीम के प्रति आकर्षित रहती है।उसका कथन द्रष्टव्य है–''मैं साथ रहने लगी हूँ और .....महीम और उम्मी और माँ यानी मैं..... उम्मी का सुहाग मेरे धैर्य को चुनौती दे रहा है। रात को बगल के कमरे में दोनों जागते रहते है, मैं चूड़ियों की खनखनाहट सुनती हूँ और मेरे अंदर की प्यासी चुड़ैल का जंगली नाच शुरू हो जाता है।..... मैं घात लगाये रहती हूँ। उम्मी के सोते ही महीम को खींच लाती हूँ ,अपने बिस्तरे पर .....फिर क्या होता है?वासना की विकट आँच में झुलसी हुई राक्षसी उस मर्द को मथने लगती है.....मथ कर छोड़ देती है .....अतृप्त वासना की यह तांडव लीला हर रात चलती रहती है।''(8) पारिवारिक ,नैतिक और सामाजिक मूल्यों का यह क्षरण सबके ही दुख का कंभीपाक कारण बन जाता है। बलात्कार जैसी त्रासद स्थिति का चित्रण भी उपन्यास में लेखक ने किया है। चम्पा और इंदिरा का शोषण और उत्पीड़न इसका एक दुखद उदाहरण बन कर प्रस्तुत होता है।

लेखक द्वारा रचित उपन्यास 'उग्रतारा' भी स्त्री–जीवन की विडम्बनाओं का मूर्त चित्रण है। कथानायिका उग्रतारा अधेड़ आयु के भभीखन सिंह के साथ जीवन यापन करने के लिए अभिषप्त है। स्त्री की इच्छा और अनिच्छा का कोई औचित्य ही यहाँ शेष नहीं रह जाता है। उग्रतारा ने '' नई परिस्थिति के सामने पूरी तरह आत्मसमर्पण कर दिया था। अब वह भभीखन सिंह की घरवाली थी। लाइन के क्वार्टरों में रहने वाले छोटी उम्र के सिपाही उसके देवर थे । खूँटियों में टँगा हुआ खादी लिबास अब उसकी निगाहो को चढ़ाने की अपनी सामर्थ्य खो चुका था।''(9) उसका मन आज भी अपने आज भी अपने प्रेमी कामेश्वर को याद करता है। स्त्री–हृदय की मार्मिक पड़ताल करता यह उपन्यास आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। अपने त्रासद जीवन को स्मरण करतें हुए उगनी सोचती है–'' दरअसल उगनी को अपने–आप पर गुस्सा आ रहा था। वह झुँझला रही थी। इन चार–पाँच दिनों के अंदर कम से कम दस बार तो उसकी आँखे अवश्य गीली हुई होंगी। नींद का गाढ़ापन ख़त्म हो गया था। रात को बड़ी देर तक अनाप शनाप सोचते–सोचते माथे की रग–रग सुस्त हो जाती थी और उसके बाद कपार टनकने लगता था, फिर जैसे–तैसे पलकें झिंप जाती थीं। मगर यह तो नींद नहीं कहीं जाएगी।(10)असहाय स्त्री को जीवन अत्यंत विडम्बनापूर्ण होता हैं। उग्रतारा वह केवल नाम ही की थी। उसका जीवन तो उगनी के खाँचे में कैद हो चुका था। उसका सनातन विवाह भी किसी बलात्कार से कम ना था। बेमेल विवाह की त्रासदी को नागार्जुन ने उपन्यास में अत्यंत भावपूर्ण तरीके से उकेरा है।

उपर्युक्त सामाजिक विसंगतियों के अतिरिक्त नागार्जुन ने पूँजीवादी व्यवस्था के शोषण तल को भी उधेड़कर रख दिया है। पूँजीवाद मूल्यों की पतनशीलता एवं सामाजिक पिछड़ेपन का एक महत्वपूर्ण कारक होता है। घुटते हुए आम मनुष्य का चित्रण लेखक नें 'इमरतिया' नामक उपन्यास में भी किया है। उपन्यास की क्रेंद्रीय पात्र इमरतिया अपने जीवन को एक भिखारिन से भी हीन अनुभव करती है–'' उलटे वह मुझसे कहीं अधिक सुखी है। आज़ाद हो जहाँ–तहाँ घुमती है। चाहे जहाँ जिस किसी औरत या मर्द से खुलकर बातचीत करती होगी। जितने आँसू इन गालों से होकर बहे हैं।,उतने आँसू उस भिखारिन ने भी नहीं बहाये होगें। उसका अपना बच्चा होगा ,बच्ची होगी। उन्हें जी भरकर वह प्यार करती होगी। निराशा या उदासी का ज्वार उसके जीवन में शायद ही उतना होगा। वह दो–चार रोज बाद दोवारा आयेगी तो में उससे बातें करूँगी.....कोई तीसरा मौजूद रहा तो नहीं करूँगी बातें ।''(11) उपर्युक्त उद्धरण से सहज ही इमरतिया जैसी स्त्रियों का अभिषप्त जीवन सामने आता है।

'जमनिया का बाबा ' उपन्यास में लेखक ने विसंगतियों से परिपूर्ण व्यवस्था के फलस्वरूप उत्पन्न सामाजिक अपसंस्कृति और मूल्य हास का चित्रण किया हैं। उपन्यास में जमनिया का बाबा का व्यक्तित्व अनैतिकता से परिपूर्ण है। दूसरी ओर वह छद्म रूप से संसार को नैतिकता का पाठ पढ़ाता फिरता है। इमरतिया मठ में होने वाले अनैतिक आचरण को उजागर करते हूए कहती है–''गौरी तो थी ही छिनाल। वह साल–साल में दो तीन मर्द बदलती थी। वह उन मर्दो का बुरी तहर पीछा करती थी जो डील–डील के तगड़े होते थे।''(12) ऐसी गौरी को मठ में रखा गया था जिसके लिए केवल वासनापूर्ण ही प्रधान थी।'जो दस साल के लड़के से लेकर सत्तर साथ के बूढ़े तक पर निगाह लगाये रखती थी। गौरी का इस्तेमाल कर जमानिया का बाबा उसे थानेदार के पास खुश करने के लिए भेजता है

और केस जमनिया के बाबा और उसके मित्र के पक्ष में झुक जाता है। सामाजिक विसंगतियों का पूँजीवाद से घालमेल आम आदमी के लिए सदैव खतरनाक होता है। नागार्जुन परिवेश में व्याप्त शोषण के तंत्र से भली–भाँति परिचित थे और उन्होनें उसके दुष्प्रभावों को सदैव उजागर किया।

'फरो नामक उपन्यास में नागार्जुन नें सामाजिक सम्बन्धों की गति में 'अर्थ' की भूमिका को भी सूक्ष्मता से रेखांकित किया है। पारो पैसे के लोभ में ही पैतांलीस साल के चुल्हाई चौधरी से विवाह करती है। यह जानते हुए भी कि उसकी वय कम है और चुल्हाई से उसका विवाह असंतुलित एंव बेमेल है। पैसे के लोभ में मिथिलांचल में बेटी को विवाह के नाम बेचने की कुरीति को भी इसी बहाने लेखक ने उजागर किया है। बिरजू पारो के बेमेल विवाह के संदर्भ में कहता है–''यह अच्छा ही हुआ कि उसकी शादी हो गई। दुल्हे की तीसरी बार शादी हो रहीं थी तो उससे क्या ? घर तो खुशहाल मिला। ''(13) कहने को तो पारो को एक खुशहाल घर मिला था पर वह अंदर से एक घुटनशील और अभिषप्त जीवन जी रही थी। इसी प्रकार 'गरीबदास' नामक उपन्यार में भी लेखक ने गरीबी, अव्यवस्था, जातिगत और सामाजिक भेदभाव की विसंगतियों को दर्शाया है। जनवादी उपन्यासकार के रूप में नागार्जुन अत्यंत सचेत और संवेदनापरक दृष्टि रखते हैं। लक्षणदास के आँसू बहते देखकर गरीबदास कहता है– '' यह आँसू है.....हजार–हजार वर्षो से अछूतों की समूची जातियाँ इसी तरह आँसू बहाती चली आ रही हैं। ये लाचारी के आँसू है। दीन–हीनी भावों के आँसू है।''(14) समग्र रूप से मूल्यांकन किया तो स्पष्ट हो जाता है कि नागार्जुन के उपन्यासों में जनवादी चेतना पूर्ण रूप से विद्यमान है। शोषित और वंचित वर्ग के प्रति उनके हृदय में गहरी करूणा विद्यमान है और वे उनके अधिकारों की मुखर वकालत करते हैं। स्त्री जीवन की त्रासदी और विडम्बनाओं से भी उनका हृदय आप्लावित है और वे ऐसे समाज की कल्पना करते हैं। जहाँ हर नारी को मानवोचित अधिकार प्राप्त है तथा उसकी गारिमा मर्यादा तथा उसके निर्णयों का सम्मान है। नागार्जुन पूँजीवाद के खतरों के प्रति भी हमें आगाह करते हुए दिखाई देते हैं। उनका लेखन वर्तमान परिदृष्य में अत्यंत प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची

1– रतिनाथ की चाची, नागार्जुन, पृष्ठ–24, राजकमल प्रकाशन, 2009

2– वही, पृष्ठ–85–86 राजकमल प्रकाशन, 2009

3– नई पौधे, नागार्जुन, पृष्ठ–10, राजकमल पेपरबैक्स, 2019

4– वही, पृष्ठ–20, राजकमल प्रकाशन, 2019

5– बाबा बटेसरनाथ नागार्जुन, पृष्ठ–16,राजकमल प्रकाशन, 2009

6– वरूण के बेटे, नागार्जुन, पृष्ठ–77, राजकमल प्रकाशन, 2009

7– दुखमोचन (सम्पूर्ण उपन्यास, खण्ड–02), नागार्जुन, पृष्ठ–21, राजकमल प्रकाशन, 2009

8– कुंभीपाक, नागार्जुन, पृष्ठ–71, राजकमल प्रकाशन, 2009

9– उग्रतारा, नागार्जुन, पृष्ठ–10, राजकमल प्रकाशन, 2009

10– वही, पृष्ठ–11, 2019

11– इमरतिया, नागार्जुन, पृष्ठ–06, राजकमल प्रकाशन, 2009

12– वही, पृष्ठ–26 राजकमल प्रकाशन, 2009

13– पारो (सम्पूर्ण उपन्यास, खण्ड–03), नागार्जुन, पृष्ठ–552, राजकमल प्रकाशन, 2019

14– गरीबदास, (सम्पूर्ण उपन्यास, खण्ड–02),पृष्ठ–541,राजकमल प्रकाशन, 2009